हाजी मुन्ना ख़ान
और
हज्जन राबिया बेगम
के पौते और

जनाब अली मुहम्मद के नेक फ़रज़न्द

आज़म अली के अक़्दे मसनून
के मौके पर एक

अनमोल तोहफ़ा

3 अप्रेल 2019

शाया कर्दा

अब्दुल ख़ालिक़, अजमेर शरीफ़
मोबाईल : 9929022200

بسم الله الرحمن الرحيم

मक़सदे इशाअते मज़मून

बिरादराने इस्लाम!

मौला तआला ने हमें अपना पसन्दीदा दीन अता फ़रमाया। क्या ही अच्छा होता कि हमारी ज़िन्दगी के तमाम शोबों में इस्लाम के कामिल जलवे नज़र आते। लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि हम में ग़ैरों की बहुत सारी रस्मों ने जड़ पकड़ ली है और बहुत सारे ग़ाफ़िल मुसलमानों पर बे दीनों की तहजीब और तमद्दुन का असर नुमाया तौर पर ज़ाहिर होता है। ख़्याल रहे कि हम पर लाज़िम और फ़र्ज़ है कि हम इस्लामी तालीमात पर अमल करें। दीनी दर्द और ख़ैरख़्वाही के पेशे नज़र निकाह के ताअल्लुक से चन्द ज़रूरी बातें आपके सुपुर्द कर रहा हूँ। मौला तबारक व तआला हम सब को तमाम नाजायज़ बातों और जाहिलाना रस्मों से बचने की तौफ़ीक़ दे। और इस्लामी तालीमात के उजाले में हमें ज़िन्दगी गुज़ारने का शऊर अता फ़रमाए। (आमीन)

हदीस

1. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :– ऐ जवानों! तुम में जो कोई निकाह की इस्ततआत (ताक़त) रखता है वो

निकाह करे कि यह (अजनबी औरत की तरफ नज़र करने से) निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाला है और जिसमें निकाह की इस्तताअत नहीं वो रोज़े रखे कि रोज़ा शहवत को तोड़ने वाला है। (सहीह बुख़ारी शरीफ़)

2. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः– जो शख़्स मेरे तरीके को पसन्द करता है, उसे चाहिए कि मेरी सुन्नत पर चले और निकाह मेरी सुन्नत से है। (कन्ज़ुल उम्माल शरीफ़)

3. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः– औरत से निकाह चार वजहों से किया जाता है एक उसके माल की वजह से, दूसरा उसके खानदान की वजह से, तीसरा उसके हुस्न व जमाल की वजह से, और चौथा उसकी दीनदारी की वजह से। तुम दीनदार को तरजीह दो। (सहीह बुख़ारी शरीफ़)

4. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः– जो किसी औरत से उसकी इज़्ज़त की वजह से निकाह करे, अल्लाह तआला उसकी जिल्लत में ज़ियादती फ़रमाएगा, और जो किसी औरत से उसके माल की वजह से निकाह

करेगा, अल्लाह ताअला उसकी मोहताजी ही बढाएगा, और अगर उसके ख़ानदान की वजह से निकाह करेगा तो उसकी रज़ालत (ओछेपन) में ज़ियादती फ़रमाऐगा, और जो इसलिए निकाह करे कि इधर उधर निगाह ना उठे और पाक दामनी हासिल हो तो अल्लाह ताआला उस मर्द के लिए उस औरत में और उस औरत के लिए उस मर्द में बरकत फ़रमाएगा। (तबरानी शरीफ़)

मसाईले निकाह

निकाह से मक़सूद होता है, दो क़ौमों का मिल जाना यानी लडके लडकी वाले एक दूसरे के क़राबत दार और मुहिब्ब बन जावें, इसलिए इसका नाम निकाह है। निकाह के माने हैं मिल जाना, तो यह निकाह ख़ानदानों और जमाअतों को मिलाने वाली चीज़ है।

मसअला :- निकाह कभी फ़र्ज़, कभी वाजिब, कभी मकरूह, और कभी हराम भी होता है।

मसअला :- अगर यह यक़ीन हो कि निकाह ना करने की सूरत में ज़िना में मुब्तला हो जाएगा तो निकाह करना फ़र्ज़ है। (दुर्रे मुख़्तार)

मसअला :- अगर महर, नान व नफ़्क़ा देने और बीवी

बच्चों के हुकूक़ पूरे करने पर क़ादिर हो शहवत का बहुत ज़्यादा ग़लबा ना हो तो निकाह करना सुन्नत है। (दुर्रे मुख़्तार)

मसअला :- अगर महर व नफ़्क़ा देने पर कुदरत हो और ज़िना या बद निगाही में मुब्तला होने का अन्देशा हो तो इस सूरत में निकाह करना वाजिब है। (रद्दुल मोहतार)

मसअला :- अगर यह अन्देशा हो कि निकाह करने की सूरत में नान व नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा ना कर सकेगा तो अब निकाह करना मकरूह है, और इन बातों का यक़ीन हो तो निकाह करना हराम है। मगर निकाह बहर हाल हो जाएगा। (दुर्रे मुख़्तार)

मसअला :- निकाह और उसके हुकूक़ अदा करने में और औलाद की तरबीयत में मशगूल रहना नवाफ़िल में मशगूली से बहतर है। (रद्दुल मोहतार)

नाजायज़ रस्में

1. मंगनी या शादी के वक्त लड़के को सोने की अंगूठी पहनाना सख़्त मना है। (सोना पहनना मर्द के लिए हराम है)

2. दुल्हे को हाथ पैरों में मेहंदी लगाना नाजायज़ है।
3. दुल्हन को मेहंदी लगाना जायज़ है लेकिन उसके लिए औरतों के साथ गैर मर्दों का इकट्ठा होना और बुलन्द आवाज़ में गाना बजाना नाजायज़ है।
4. आज एक रस्म खूब आम हो गई है कि मंगनी के बाद लड़का लड़की फ़ोन पर एक दूसरे से बात करने लगते हैं, साथ घूमने फिरने जाते हैं। याद रहे निकाह से पहले यह सब बातें सख़्त नाजायज़ और हराम हैं, और जो वालदैन इस सब की इजाज़त देते हैं वो बहुत बड़े गुनाहगार हैं बरोज़े कियामत उन्हें इसके सबब सख़्त अजाब दिया जाएगा।
5. बाज़ दीन से ग़ाफ़िल लोगों का ख़्याल है कि निकाह में नाच गाना आतिशबाज़ी वगैरह ना हो तो गोया निकाह ही ना हुआ, याद रहे नाच गाना आतिशबाज़ी वगैरह हर हाल में नाजायज़ और हराम है।
6. अक्सर यह रिवाज है कि तारीख तय होने के बाद निकाह होने तक हर तीसरे दिन या हर जुमेरात को मोहल्ले या रिश्ते की औरतें जमा होती हैं और बुलन्द आवाज़ में गीत गाती हैं, यह हराम है कि अव्वलन ढ़ोल बजाना ही हराम है, फिर औरत का

गाना मजीद बुरा, कि औरत की आवाज़ भी औरत है।

7. दुल्हे को रेशमी कपड़े पहनाना और बारात के साथ बैण्ड बाजा ले जाना सख़्त नाजायज़ और मना है।
8. दुल्हे के जूते चुराना और पैसे लेकर वापस करना नाजायज़ है कि यह रस्म हिन्दूवानी है।
9. मोहर्रम और सफ़र (तेरातेजी) के महीने में शादी ना करने का अक़ीदा रखना इंतेहाइ बुरा है।
10. बाज़ लोग दुल्हा दुल्हन के साथ छुरी चाकू इस ख़्याल से रखवाते हैं कि इसके जरिए दुल्हा दुल्हन भूत प्रेत वगैरह से महफ़ूज़ रहेंगे। यह ख़्याल इंतेहाई गलत है। भूत प्रेत वगैरह से बचने के लिए छुरी चाकू वगैरह का साथ ना लिया जाए बल्कि आयतल कुर्सी, कलिमाते तय्यबात और दुरूद शरीफ़ वगैह का विर्द किया जाए।
11. ससुराल में दुल्हन का दुल्हे के हाथ पर बंधा कंगना खुलवाना यह हिन्दुवानी रस्म है।

मोहतरम हज़रात! हम पर लाजिम व ज़रूरी है कि हम नाजायज़ रस्मों से दूर रहें और शरीअते मुकद्दसा के उजाले में जिन्दगी गुजारें। मौला तआला हम सबको अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैही वसल्लम की कामिल पैरवी नसीब फ़रमाऐ। (आमीन)

अज़ीम खुशख़बरी

बिरादराने इस्लाम! अस्सलामु अलयकुम

हुजूर ख्वाजा ग़रीब नवाज़ मोईनुद्दीन हसन अजमेरी अलैहिर्रहमां के मुक़द्दस दयार दारूल ख़ैर अजमेर शरीफ़ में 2006 से जहालत का अंधेरा दूर करने वाले, उलूमे दीनिया के उजाले से दिलों को रोशन करने वाले, हुजूर आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमां की तालीमात को आम करने वाले दारूल उलूम फ़ैजाने अताए रसूल के अराकीन ने मौजूदा ज़माने के तक़ाज़ों के मुताबिक दीनी व दुनियावी तालीम के साथ साथ प्रोफेशनल कोर्स के माकूल बन्दोबस्त के पेशे नज़र इदाराए हाजा के शायाने शान **एन. एच 8, जयपुर रोड़, गगवाना अजमेर शरीफ़** में एक वसीअ और कुशादा ज़मीन हासिल की है।

लिहाजा जुमला अहबाबे अहले सुन्नत से पुरखुलूस गुज़ारिश है कि दारूल उलूम फ़ैज़ाने अताए रसूल की हर तरह से इमदाद फ़रमा कर दारैन की बरकते हासिल करें।

अद्वाई ख़लीफ़-ए-हुजूर ताजुश्शरीया

हज़रत अल्लामा मौलाना हाजी

मुहम्मद अनवार अहमद नईमी

बानी व सरबराहे आला

दारूल उलूम फ़ैज़ाने अताए रसूल,

कुम्हार मोहल्ला, अन्दरून देहली गेट, अजमेर शरीफ

मालूमात के लिए : 8078600595, 9214468786